अभिषेक गीत

(तर्ज तेरे नाम.....)

हे जिनदेव ! हमको मिला है, सबसे प्यारा ये जैन धरम।
हे जिनदेव ! धन्य किया है, हमने अपना ये मानुष जनम।।

घर से भाव बने मैं मंदिर जाऊँगा।
पारस प्रभु के दर्शन कर हर्षाऊँगा।
प्रभु दर्शन कर कूप से जल भर लाऊँगा।
कलश हाथ में ले प्रभु को नहलाऊँगा।

प्रभु अभिषेक-3, जिसने किया है, पाया उसने ही शिवसुख परम्।।

अष्टद्रव्य से पूजन थाल सजाऊँगा।
नाच-नाच प्रभु गुण आराधन गाऊँगा।
हे अखंड ! हे ज्ञायक प्रभु ! हे अविनाशी।
ज्ञानानंद स्वभावी हे निज घटवासी।

हे गुणधाम-3 अब पा लिया है, हमने अपना ये आतम धरम।।

हे प्रभु ! केवलज्ञानी, लोक विजेता हो।
सिद्ध स्वरूपी मुक्तिपथ के नेता हो।
वीतरागता प्रभु तुम सी प्रगटाऊँगा।
भेदज्ञान से मुक्ति मंजिल पाऊँगा।

मेरा मिलन-3 मुझसे करा दो-हो न फिर से मेरा अब जनम।।

प्रभु पूजा से कभी न आधि-व्याधि हो।
रोग-शोक मिट जाये प्राप्त समाधि हो।
पुण्योदय से मिलते प्रभु वा प्रभु पूजा।
प्रतिदिन प्रातः इस बिन काम न हो दूजा।

स्वर्ग विमान-3 जनम लिया है, किया है जिसने पुण्य धरम।।